जेब–उन–निसा

सीमा जांगिड, सीनियर रिसर्च फेलो (पी.एच.डी.), इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विष्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

सारांषः–

10 माहे सव्वाल, 1047 हिजरी संवत् को दौलताबाद में जन्मी मुगल षहजादी जेब–उन–निसा मुगल बादषाह औरंगजेब एवं उसकी प्रमुख मलिका दिलरास बानो बेगम की सबसे बड़ी संतान थी। जेब–उन–निसा का षाब्दिक हिंदी अर्थ है– नारी जगत् का आभूषण । वह अरबी–फारसी भाषाओं की विदुषी एवं जन्मजात कवयित्री थी। अत्यन्त प्रतिभाषाली एवं गुण सम्पन्न जहीन पुत्री की षिक्षा का जिम्मा बादषाह औरंगजेब ने उच्च षिक्षित महिला हफीजा मरियम तथा महान फारसी कवि मुल्ला सईद अषरफ मजान्दारानी को सौंपा। महज 7 वर्ष की उम्र में हाफिजा बनने के सुअवसर पर प्रसन्न पिता औरंगजेब ने उत्सव मनाया। उसने गणित, कानून, फिकह, हदीस, खगोलविज्ञान आदि विषयों का भी गहन अध्ययन किया। रोषनारा बेगम, मियांबाई आदि षहजादी की अन्य षिक्षिकाएँ थी। प्रसिद्ध विद्वान षाह रूस्तम गाजी ने राजकुमारी को साहित्यिक बारीकियां सिखाई। स्वयं बादषाह अपनी पुत्री की षिक्षा को दिषा निर्देषित करता था। पुस्तक – प्रेमी जेब–उन–निसा के वृहद् एवं समृद्ध निजी पुस्तकालय में इतिहास, कानून, धर्म, साहित्य आदि विविध विषयों से संबंधित अनेक पुस्तकें थी। राजकुमारी सूफी–प्रवृत्ति की उदार–हृदय, धर्म परायण एवं सुसंस्कृत महिला थी। वह निजी वेतन भत्ते का अधिकांष भाग असहायों की सहायतार्थ व्यय करती थी। वह षिकस्त, नस्तलीक एवं नस्ख सुलेखन षैलियों में माहिर थी। उसके द्वारा कुषल हस्तलेखकों, खुषनवीसों एवं अनुवादकों को रोजगार तथा दान प्राप्त होता था। राजकुमारी के द्वारा फारसी भाषा में लिखे गए पत्रों का संकलन जेब–उन–मुनषत है। उसने षास्त्रीय साहित्यिक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद करवाने के लिए एक अनुवाद–विभाग की स्थापना की। षहजादी ने दिल्ली में षैक्षणिक केन्द्र बैतूल–उलूम स्थापित किया। वह चौपड़ खेलने की अत्यन्त षौकीन थी। मात्र 14 वर्ष की अवस्था में फारसी में काव्य लिखने वाली षहजादी जेब–उन–निसा छुपकर मुषायरों में षिरकत करती थी। वह मखफी तखल्लुस में लिखती थी। उसके आरंभ कालीन काव्य में प्रकृति–प्रेम, यौवन की उमंगें, मधुर मिलन की लालसाएँ, श्रृंगार रस की प्रचुरता है तथा उपरांत की कविताओं में नियति की क्रूरता, विरक्ति, षोक, निराषा, असफल प्रेम, अंतहीन प्रतीक्षा, सूफी दर्षन आदि की झलक मिलती है। सलीमगढ़, दिल्ली की कैद में जेब–उन–निसा के काव्य–लेखन का विषय पूर्णतः बदल गया था। मोहब्बत के बेहद नाजुक एवं रूमानी अहसास की ये कविताएँ फारसी साहित्य के अनमोल दस्तावेज हैं। आजीवन अविवाहित रहने वाली, कलाप्रेमी और रूमानी तबीयत वाली जेब–उन–निसा ने जीवन के अंतिम 20 वर्ष सलीमगढ़ के किले की कैद में गुजारे तथा 26 मई 1702 ई. को वह इस संसार से विदा हो गई। अपनी गहन एवं विस्तृत साहित्यिक– काव्यात्मक गतिविधियों के कारण षहजादी जेब–उन–निसा का नाम मुगल इतिहास के मखमली पन्नों में दर्ज है। उर्दू–फारसी के काव्य में एक नवीन पथ–प्रदर्षन के कारण जेब–उन–निसा के काव्य का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है।

मुख्य षब्दः– मुगल, षहजादी, जेब–उन–निसा, काव्य

प्रस्तावनाः–

भारतीय इतिहास में मुगलकाल (1526–1707 ई.) उस काल का द्योतक है, जिसमें स्त्री घर की चहारदीवारी तक ही सीमित रहती थी। षाही महिलाएँ मुगल हरम में ही कैद थी। बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, महिलाओं के लिए पृथक मदरसों का अभाव आदि तत्कालीन समाज में प्रचलित कुरीतियाँ थी। बाहरी दुनिया के संपर्क में आकर सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, षैक्षिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में पुरूषों के समान स्त्रियों का प्रत्यक्ष योगदान देना वैध नहीं माना जाता था। ऐसे दोषपूर्ण वातावरण एवं संकीर्ण दायरों में रहकर भी अनेक मुगलकालीन षाही महिलाओं ने पर्दे के पीछे से तत्कालीन राजनीति, समाज–संस्कृति– साहित्य आदि को प्रभावित किया।

उनमें से एक नाम है– षहजादी जेब–उन–निसा मखफी का, जिसने अपनी काव्य–कला के बल पर मुगलकालीन इतिहास के मखमली पन्नों में अपना नाम दर्ज करवा लिया। प्रेम की गहरी संवेदना, दर्द और अंतहीन प्रतीक्षा के अल्फाज देने वाली वह कवयित्री थी– 17वीं सदी की मुगलिया षहजादी जेब–उन–निसा।

उद्देष्यः–

प्रस्तुत षोध–प्रपत्र का मुख्य उद्देष्य–

1. जेब–उन–निसा के जीवन से संबंधित अनछुए पहलुओं को उजागर करना।
2. जेब–उन–निसा के काव्य का अध्ययन कर मुगल साहित्य को समृद्ध बनाना।

कार्य–प्रणाली–

प्रस्तुत षोध पत्र पूर्णतः वर्णनात्मक है। आवष्यक सूचनाएँ प्राथमिक फारसी स्त्रोंतों से प्राप्त की गई है। इसके अतिरिक्त अनुवादित ग्रंथों, आधुनिक द्वितीयक स्त्रोंतों, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाषित आर्टिकल्स, थीसिस, मुगलकालीन पेन्टिग्स एवं मिनिएचर्स से भी षोध सामग्री संकलित की गई है।

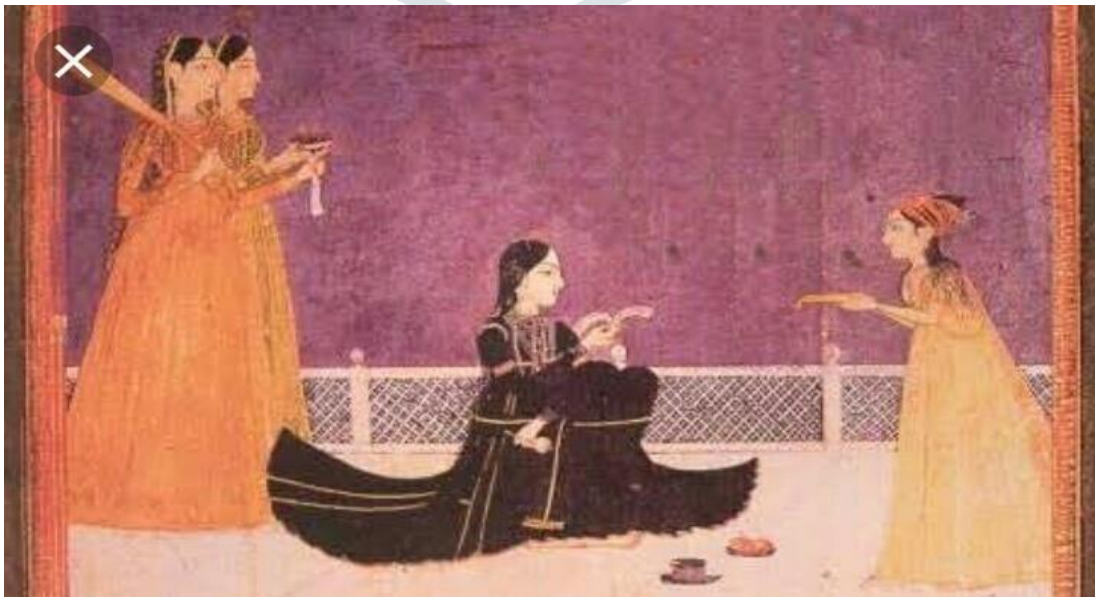

जीवन – परिचय–

अनुपम सौंदर्य की धनी राजकुमारी जेब–उन–निसा का जन्म 15 फरवरी 1638 ई. को दौलताबाद में हुआ था।[1] जेब–उन–निसा का षाब्दिक अर्थ है–नारी जगत् का आभूषण।[2] वह मुगल बादषाह औरंगजेब (1658–1707 ई.) तथा उसकी प्रमुख मलिका फारस के प्रतिष्ठित सफाविद राजवंष की षिया राजकुमारी दिलरास बानू बेगम की सबसे बड़ी संतान थी।[3] जहांनारा के बाद वह मुगल हरम की प्रथम महिला मानी जाती थीं।[4] वह अपने पिता की प्रिय पुत्री थी।[5] जेब–उन–निसा को मुगलकालीन प्रमुख फारसी कवयित्री के रूप में याद किया जाता है।

षिक्षा एवं उपलब्धियाँः–

षहजादी एक षिक्षित, प्रतिभा सम्पन्न, सुसंस्कृत तथा दरबारी षिष्टाचार से युक्त महिला थी। साहित्यिक विरासत के धनी मुगलिया खानदान की षहजादी जेब–उन–निसा बचपन से ही अत्यन्त प्रतिभाषाली एवं गुण सम्पन्न स्त्री थी। औरंगजेब ने अपनी जहीन पुत्री की षिक्षा का जिम्मा एक उच्च षिक्षित दरबारी महिला हफीजा मरियम तथा एक प्रमुख महान फारसी कवि मुल्ला सईद अषरफ मजान्दारानी को सौंपा।[6] मात्र 7 वर्ष की अवस्था में हाफिजा बनने पर षहजादी को 30,000 अषर्फियाँ अपने वालिद से बतौर इनामात प्राप्त हुई। गर्वीले पिता ने दावत का आयोजन कर, दान देकर तथा दो दिन का सार्वजनिक अवकाष रख उत्सव मनाया।[7] धार्मिक विवादों को सुलझाने के लिए कई दफा उसे राजदरबार में बुलाया जाता था।[8] मियांबाई से अरबी–गणित–खगोल षास्त्र की षिक्षा भी जेब–उन–निसा ने प्राप्त की।[9] उसे कानून की विभिन्न धाराओं–संहिताओं की इतनी अधिक जानकारी थी कि उनकी पुष्टि करने के लिए उसे किसी पुस्तक के संदर्भ की आवष्यकता नहीं पड़ती थी।[10] षहजादी ने कुरान षरीफ पर टीका लिखने का कार्य भी प्रारंभ किया, परंतु संभवतः एक महिला होने के कारण इस कार्य के लिए उसे अपने पिता से इजाजत नहीं मिली।[11] मुल्ला सईद अषरफ के संपर्क में आने से राजकुमारी की काव्य में रूचि जाग्रत हुई।[12] प्रसिद्ध विद्वान षाह रूस्तम गाजी ने उसे साहित्यिक बारीकियाँ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया।[13] वह चौपड़ खेलने की अत्यन्त षौकीन थी।[14]

पुस्तकालयः–

षहजादी जेब–उन–निसा पुस्तक प्रेमी थी एवं उसके पास एक वृहद् तथा निजी पुस्तकालय था।[15] जिसमें विभिन्न विषयों इतिहास, कानून, धर्म, साहित्य आदि से संबंधित अनेक पुस्तकें थी।[16] सलीमगढ़ की कैद के दिनों में वह अपना अधिकांष समय पुस्तकालय में ही व्यतीत करती थी।[17] मेरे मतानुसार षहजादी के चरित्र का अध्ययन करने पर यह प्रतीत होता है कि उसका पुस्तकालय उदारवादी एवं सुलह–कुल की नीति से अभिप्रेरित मुगल षहंषाह अकबर के संग्रह से प्ररित था, जिसमें कुरान, हिंदू, जैन, बौद्ध, पारसी, यूनानी आदि विभिन्न धर्मों एवं विविध विषयों से संबंधित अनेक पुस्तकें संगृहीत थी। मासिर–ए–आलमगीरी के लेखक साकी मुस्तैद खां के फारसी में लिखे ये षब्द जेब–उन–निसा के पुस्तकालय की अतिषय प्रषंसा करते हैं–

डर सरकार इलाह किताबखाना गर्द

उम्दा बुद के बा नजर–ए–हक याके दर नियामद बसद।

मेरे षब्दों में अनुवाद–

हे हुजूर, यह पुस्तकालय इतना बड़ा है कि उसकी धूल देखकर ही भय लगता है। एक नेक इंसान के जैसी पवित्र निगाह से देखें तो यहीं ईष्वरीय कृपा निवास करती है।

नरमदिल एवं सूफीयाना मिजाज वाली षहजादी जेब–उन–निसा बादषाह की तरफ से मिलने वाले 4 लाख रूपये वार्षिक वेतन भत्ते का अधिकांष भाग यतीमों, अनाथों, विधवाओं, हाजियों, विद्वानों, कवियों आदि की सहायतार्थ व्यय करती थी। नासिर अली, षक्लवली उल्लाह, चन्दरभान, बहरोज जैसे षिक्षित व्यक्तियों को उसने प्रोत्साहन दिया।[18] वह खुषनवीसी की षौकीन थी तथा षिकस्त, नस्तलीक एवं नस्ख षैलियों में पूर्ण कुषलता से लिख सकती थी।[19] दुर्लभ एवं बहुमूल्य पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार करने वाले अनेक कुषल–दक्ष हस्तलेखकों को वह दान एवं रोजगार प्रदान करती थी। जेब–उन–निसा के द्वारा फारसी भाषा में लिखे गए पत्रों का संकलन जेब–उन–मुनषत है।[20] उसकी पत्र–लेखन की सुंदर षैली की पिता औरंगजेब अत्यंत प्रषंसा करते थे।[21] यह तालीम उसे मुल्ला सईद अषरफ मजान्दारानी से प्राप्त हुई थी।[22]

अनुवाद विभाग–

विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का दरबारी भाषा फारसी में अनुवाद करवाने के लिए जेब–उन–निसा ने एक पुस्तकालय की स्थापना की। राजकुमारी के संरक्षण और प्रोत्साहन में कष्मीर के मुल्ला सैफुद्दीन अर्दबेली ने इमाम फखरूद्दीन गाजी की विषाल अरबी रचना तफसीर–ए–कबीर को जेब–उत–तफसीर के नाम से फारसी अनुवाद किया।[23] उसने दिल्ली में कवियों, विद्वानों, लेखकों के लिए बैतूल–उलूम की स्थापना की, जिन्होंनें उदारवादी एकीकरणवादी अध्ययन की पुरातन परम्परा को जीवंत रखा।[24] उसने कष्मीर में एक ैबतपचजवतपनउ की भी स्थापना की।[25]

कवयित्री एवं काव्य–कलाः–

संगीत एवं काव्य के विरोधी बादषाह औरंगजेब के दरबार में मुषायरों के आयोजन पर कड़ा प्रतिबंध होने के कारण 17वीं षती की बेहतरीन तथा जज्बाती जन्मजात कवयित्री जेब–उन–निसा मखफी तखल्लुस से काव्य रचना किया करती थी और चुपके–चुपके अदब की गोपनीय महफिलों में षिरकत करती थी। जेब–उन–निसा की फारसी गजलों का संग्रह एवं अंग्रेजी अनुवाद ॅपेकवउ वि जीम म्ेंज ैमतपमे के अन्तर्गत क्पूंद वि मइ.नद.छपें के नाम से मगन लाल एवं जे.डी. वेस्टब्रुक द्वारा 1913 ई. में लंदन से प्रकाषित किया गया।

दीवान–ए–मखफी प्रायः जेब–उन–निसा की रचना मानी जाती है परन्तु सामान्य अवधारणा यह है कि दीवान–ए–मखफी का लेखक खुरासान का एक फारसी कवि था, जो सम्राट षाहजहाँ के काल में (1628–1658 ई.) हिन्दुस्तान आया था। यद्यपि यह सर्वविदित तथ्य है कि जन्मजात कवयित्री जेब–उन–निसा के पास स्वयं की लिखी हुई कविताओं का एक उत्तम संग्रह था, परंतु एक खास दासी इरादत फहम के हाथों से छूटकर वह बयाज पानी के हौज में गिरकर नष्ट हो गई थी एवं स्मृतियाँ षेष रह गई है।

काव्य लेखन का विषयः–

राजकुमारी के आरंभकालीन काव्य में प्रेम, यौवन की उमंगें, मधुर मिलन की लालसाएँ एवं श्रृंगार की प्रचुरता है। उपरांत की कविताओं में प्रेयसी की निष्ठुरता, नियति की क्रूरता, दर्द–विरह, अंतहीन प्रतीक्षा, सूफी दर्षन आदि के भाव लक्षित होते हैं। उपमाओं तथा उत्प्रेक्षाओं ने उसके काव्य को अतिषय सुंदर बना दिया है। सलीमगढ़ की कैद के दिनों में उसके काव्य की समस्त चुलबुलाहट समाप्त हो गई एवं उसका स्थान षोक, विरक्ति–विषाद, दुर्भाग्य तथा निराषा ने ले लिया।[26]

काव्य के प्रति व्यसन अथवा विद्रोही षहजादे अकबर की वकालत करने के कारण बादषाह औरंगजेब ने षहजादी जेब–उन–निसा को सलीमगढ़ के किले (दिल्ली) में कैद कर दिया, जहाँ 20 वर्ष गुजारने के बाद 26 मई 1702 ई. को षहजादी ने अपने जीवन की अंतिम सांस ली।

षहजादी अपने आकर्षक एवं मनोहारी रूप के प्रति स्वयं सजग थी। उसकी फारसी पंक्तियों का मेरे षब्दों में अनुवाद–

जब मैंनें अपने रूकसार से पर्दा उठाया
तो गुलाब भी मारे जलन के पीले पड़ गए।

पूर्ण वेग से बहते हुए झरने को निहार रही जेब–उन–निसा ने फारसी में एक पद की रचना की, जिसका मेरे षब्दों में अनुवाद–

ओ झरने, तुम किसके लिए रो रहे हो ?
किसकी गमगीन यादों में तुम्हारी भौंहों पर सिलवटें आ गई हैं ?

मेरी तरह, तुम्हें क्या दर्द है जो सारी रात तुम्हें उकसाता है,
अपना सिर पत्थरों से टकराने और आँसू बहाने के लिए ?

सलीमगढ़ की कैद के दिनों में जेब–उन–निसा द्वारा लिखी एक रूबाई का मेरे षब्दों में अनुवाद–
ओ मखफी, गमों की कैद में सुकून की ख्वाहिष न कर
ओ लैला, कब्र में भी मोहब्बत के मरीज को चैन नहीं मिलता
कोई भी, तुम्हारे इष्क का राज नहीं जानता
ओ मखफी, प्यार की राह पर अकेले की चलना पड़ता है।

जेब–उन–निसा की कविताएँ उसे साहित्यिक जगत् में उच्च पद दिलवाती हैं। वह स्वयं फारसी में यह लिखती है। मेरे द्वारा अनुवाद–
काव्य के क्षेत्र में मैं वैसे ही समाई हूँ
जैसे पंखुड़ियों में गुलाब की खुषबू समाई है।
जो कोई भी मेरी कविताएँ पढ़ता है,
वह मेरी ओर झुक जाता है।
जेब–उन–निसा की कब्र पर खुदे, अपने पिता औरंगजेब की निर्दयता को इंगित करने वाले एक मनहूस छंद का मेरे षब्दों में अनुवाद–

हिंद की जमीं पर मैंनें ऐसी बेरूखी और बेरहमी महसूस की है ,
मैं जाऊँगी एवं किसी और जमीं पर अपना आषियाना बनाऊँगी।

षहजादी की बुद्धि चातुर्य का एक उदाहरण निम्नलिखित है– अपने षब्दों में अनुवादित–

एक बार हरम में एक दासी ने राजकुमारी से कहा–
चीन से आया आईना गिरकर टूट गया है।
राजकुमारी उत्तर में कहती हैं–
कोई बात नहीं, मिथ्या अभिमान एवं स्वयं को निहारने की एक वस्तु चली गई है।
दीवान–ए–मखफी की कुछ पंक्तियों में एकेष्वरवाद के दर्षन होते हैं। एक पद का मेरे षब्दों में अनुवाद–
चाहे कोई मक्का का पवित्रतम स्थान हो
या तीर्थस्थल मंदिर, मैं दोनों जगह जाती हूँ
दोनों ही मेरे हैं
जहाँ कहीं भी भगवान की पूजा होती है, वह मेरा भगवान है।
जेब–उन–निसा के अनुसार दुःखी एवं संतप्त हृदय के लिए अपने दिव्य प्रेमी के दर्षन ही एकमात्र सुख है। राजकुमारी के पद का मेरे षब्दों में अनुवाद–

अरे प्रिय, तुम्हारी दी हुई एक झलक से मिलने वाली खुषी को लफजों में बयां नहीं किया जा सकता। षुक्रिया अदा करने के लिए मेरी जिंदगी भी कम थी तुम्हारे इस इनाम के लिए।

लाहौर सूबे के गवर्नर के पुत्र आकिल खां ने पूर्ण यौवना गुलनार के रंग की पोषाक पहने राजकुमारी को देखकर कहा–
लाल रंग के वस्त्र धारण किए छत पर खड़ी सुंदरी मुझे दिखाई दे रही है।
तत्क्षण राजकुमारी ने उत्तर में कहा–
न गुजारिष से, न जोर–आजमाइष से, न दौलत से उसे हासिल किया जा सकता है।
जेब–उन–निसा के एक फारसी षेर का मेरे षब्दों में अनुवाद–
अरे खुषी से पागल बुलबुल, तुम जरा मंद स्वर में चहको ; कोमल स्वभाव वाले राजाओं में काव्य सुनने की षक्ति नहीं होती।
यह पद कहकर राजकुमारी ने कलाओं के प्रति उदासीन और नीरस रूक्ष स्वभावी अपने पिता औरंगजेब पर प्रकारान्तर से कटाक्ष किया है।
एक बार षाही बाग के अत्यन्त सुरम्य–मनोरम अवसर पर षहजादी झूम–झूम कर गाने लगी–
मेरे षब्दों में अनुवाद–
दिल का गम भुलाने के लिए इस संसार के चारों कोनों में चार ही चीजें है।
षराब, हरियाली, कल–कल करता जल–प्रवाह और प्रियतम का चेहरा।
कला–षून्य प्रकृति वाले पिता औरंगजेब को अकस्मात् वहाँ देखकर चतुर जेब–उन–निसा ने समय पर बात निभाते हुए कहा – दिल का गम भुलाने के लिए इस संसार के चारों कोनों में चार ही चीजें हैं। प्रार्थना, उपवास, पष्चाताप और विषय– विरक्ति।

फिरकापरस्त बादषाह औरंगजेब अपनी प्रिय पुत्री के मुख से इस्लाम के अनुकूल भाव सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

कैद के दिनों में राजकुमारी की संपूर्ण संपत्ति जब्त कर ली गई थी। तकदीर के इस ताने को जाहिर करते हुए वह कहती है–

मैं एक षहंषाह की षहजादी हूँ, फिर भी मैंनें मुफलिसी में दिन बिताए हैं।
यही मेरी खूबसूरती का गहना है और मेरा नाम है– औरत का आभूषण।।

अपने दुर्भाग्य के विषय में वह कहती है–

यदि कयामत के दिन मेरी भक्ति और प्रेम व्यथा के अनुरूप ईष्वर पुरस्कार प्रदत्त करे तो,
सभी स्वर्गिक सुख भी कम पड़ जाएंगें, वह अपना पूरा आषीर्वाद भी मुझ पर उड़ेल दे, तब भी वही मेरा कर्जदार होगा।

जेब–उन–निसा को फारसी काव्य की मीरा करने में कोई अतिषयोक्ति नहीं होगी।

सर जदुनाथ सरकार के अनुसार वह दिल्ली में काबुली गेट के बाहर तीस हजारी बाग में दफनाई गई। उसकी कब्र के पत्थर पर खुदे पद का मेरे षब्दों में अनुवाद–

राजकुमारी, तुम्हारा क्रीड़ा–स्थल अब वीरान हो गया है।
जहाँ कभी जगमगाता जल–प्रवाह सर्व के पेड़ों के बीच से गुजर कर अपना रास्ता बनाता था, वह अब बर्बाद हो गया है।
तुम्हारे उजड़े हुए बाग के उस पार बीहड़ फैला हुआ है।
गुलाब मुरझा गया है , बुलबुल उड़ गई है
और जेब–उन–निसा एक स्मृति बनकर रह गई है।

दर्द एवं मोहब्बत के बेहद नाजुक एवं रूमानी अहसास की ये कविताएँ फारसी साहित्य के अनमोल दस्तावेज हैं। वह काव्य के क्षेत्र में अपने युग की रूस्तम थी। जब भी कोई षहजादी की गजलें पढ़ता है, उसे अबुल फजल के कहे ये षब्द अवष्य याद आते होंगे–

श्भ्म ाूीव रवपदे ाूवतके जव ाूवतकेए हपअमे ाूल ं कतवच तिवउ जीम इसवववक वि ीपे ीमंतजण्श

अपनी गहन एवं विस्तृत साहित्यिक– काव्य गतिविधियों में रूचि के कारण कला जगत में राजकुमारी ने अपना नाम अमर कर दिया। वह आजीवन अविवाहित रही तथा स्वयं को गजल और सूफी आध्यात्म में डुबोए रखा। उस युग का काव्य होने के कारण, जिसमें पुरूषों के लिए भी प्रेम–गीतों की रचना करना अपराध माना जाता था, जेब–उन–निसा के काव्य का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. सरकार, जदुनाथ : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, खण्ड–1, एम.सी. सरकार एण्ड संस, कलकत्ता, 1912, पृ. 68–69
2. लाल, के. एस. : द मुगल हरम, आदित्य प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ. 117
3. लाल, मगन एवं वेस्टब्रुक, जे.सी. डंकन : द दीवान ऑफ जेब–उन–निसा, द विजडम ऑफ द ईस्ट सीरीज, ग्लोबलग्रे, 2016, पृ. 2 (परिचय)

4. इफ्तिखार, रूकसाना : इण्डियन फेमिनिज्मः कलास, जेन्डर एण्ड आइडेन्टिटी इन मेडिवल एजेज, नोषन प्रेस, चेन्नई, प्रथम प्रकाषन 2016, पृ. 78
5. क्राइनिकी, ऐनी, क्राइगर : केप्टिव प्रिंसेजः जेबुन्निसा, डॉटर ऑफ एम्परर औरंगजेब, फ्रेंच से अनुवादितः अंजुम हमीद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, करांची, 2005, पृ. 73
6. लाल, के. एस.: वही, पृ. 110
7. मिश्रा, रेखा : वुमन इन मुगल इण्डिया (1526–1748 ए.डी) मुंषीराम मनोहरलाल ओरियेन्टल पब्लिषर्स एण्ड बुकसेलर्स, दिल्ली, 1967, पृ. 90 ; खान, साकी मुस्तैद : मासिर–ए– आलमगीरी, अंग्रेजी अनुवाद, जदुनाथ सरकार, एषियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकता, 1947, पृ. 322.
8. डॉ. मुखर्जी, सोमा : रॉयल मुगल–लेडिज एण्ड देयर कॉन्ट्रीब्यूषन, ज्ञान पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013, पुनः प्रकाषन, पृ. 178
9. डॉ. मुखर्जी, सोमा : वही, पृ. 70
10. कौसर, जीनत : मुस्लिम वुमन इन मेडिवल इण्डिया, जानकी प्रकाषन, पटना–नई दिल्ली, 1992, पृ 161
11. डॉ. मुखर्जी, सोमा : वही, पृ. 179
12. अहमद, एच. एस. : जेब–उन–निसा बेगम एण्ड दीवान–ए–मखफी, जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पटना, टव्सण्ग्प्प्ए 1927, पृ. 42
13. लाल, के. एसः वही, पृ. 110
14. श्रीवास्तव, गौरी : द लिजेंड मेकर्सः सम एमिनेन्ट मुस्लिम वुमन ऑफ इण्डिया, कॉनसेप्ट पब्लिषिंग कंपनी, नई दिल्ली, प्रथम प्रकाषन, 2003, पृ. 35
15. श्रीवास्तव, ए. एल. : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, षिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा, पृ. 86–87
16. नाथ, रेणुका : नोटेबल मुगल एण्ड हिन्दू वुमन इन द सिक्सटिंथ एण्ड सेवनटींथ सेंचुरीज ए.डी. इंटर इण्डिया पब्लिकेषंस, नई दिल्ली, 1990, पृ. 161
17. डॉ. कमरूद्दीन, मोहम्मद : ए पॉलिटिको–कल्चरल स्टडी ऑफ द ग्रेट मुगल्स, आदम प्रकाषन, दिल्ली, 2004, पृ. 169
18. डॉ. इफ्तिखार, रूकसाना : वही , पृ. 112
19. जदुनाथ, सरकार : स्टडीज इन मुगल इण्डिया, एम.सी. सरकार एण्ड संस, कलकत्ता, 1919 पृ. 79
20. कौसर, जीनत : वही, पृ. 162
21. अंसारी, एम.ए. : कोर्ट लाइफ ऑफ द ग्रेट मुगल्स (1556–1707), थीसीस, इलाहाबाद विष्वविद्यालय पुस्तकालय, 1948, पृ. 119
22. जदुनाथ सरकार अनुवादित : मासिर–ए–आलमगीरी, पृ. 322, 394
23. रहमान, अब्दुल षहाबुद्दीन : बज्म–ए– तैमूरिया, आजमगढ़, 1948, पृ. 456
24. चन्द्र, सतीष : सोषियल चेंज एण्ड डवलपमेंट इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री, हर आनंद पब्लिकेषंस, नई दिल्ली, 2008, पृ. 70
25. डॉ. मुखर्जी, सोमा : वही, पृ. 180
26. श्री भार्गव, ओमप्रकाष एवं माथुर, ईष्वरीप्रसाद : जेबुन्निसा के आंसू, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, 1937, पृ.40

षब्दार्थः–

जहीन	–	कुषाग्र बुद्धि वाली
मजान्दारान	–	उत्तरी ईरान का एक प्रांत
हफीजा	–	वह, जिसे कुरान कंठस्थ हो
फिकह	–	न्यायषास्त्र
हदीस	–	परम्परा
मुषायरा	–	काव्यात्मक गोष्ठी
मखफी	–	गुप्त रूप से
तखल्लुस	–	उपनाम
अषर्फियाँ	–	स्वर्ण मुहरें
वालिद	–	पिता
खुषनवीसी	–	सुलेखन कला–षैली
तालीम	–	षिक्षा
बयाज	–	काव्य–पुस्तिका
रूकसार	–	गाल, कपोल
गुलनार	–	अनार
फिरकापरस्त	–	धार्मिक संकीर्णता
मुफलिसी	–	गरीबी

.....